झलक 2015

केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान की गृह पत्रिका

झलक
2015

केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान की गृह पत्रिका

प्रबंध संपादक
डॉ. सी.एन. रविशंकर

संपादक
डॉ. संतोष अलेक्स

केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान
विल्लिंगडन आईलेंड, मत्स्यपुरी पी.ओ.
कोची - 682 029
ई.मेल : aris.cift@gmail.com
cift@ciftmail.org

आमुख

केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान से प्रकाशित ''झलक'' नामक गृह पत्रिका का प्रवेशांक आपके सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे गर्व और खुशी महसूस हो रही है। संस्थान के इतिहास में पहली बार हिंदी भाषा में लेखन को सदस्य कर्मचारियों में प्रोत्साहित करने के लिए इस प्रकार की एक पहल की गई है। इसके लिए संस्थान के राजभाषा अनुभाग के सदस्य बधाई के पात्र हैं।

''जलधि'' संस्थान की राजभाषा पत्रिका है जिसमें केवल वैज्ञानिक लेख शामिल किये जाते हैं, जिस कारण इस में वैज्ञानिकों के अलावा अन्य संवर्ग के कर्मचारियों को शामिल होने का मौका नहीं मिलता। ''झलक'' गृहपित्रका में संस्थान के सभी संवर्ग के कर्मचारियों, उनके परिवार के सदस्यों एवं शोधार्थियों की रचनाएं शामिल है। इससे सदस्य कर्मचारियों की रचनात्मक क्षमताओं को विकसित करने का मौका मिलता है साथ में हिंदी भाषा के प्रति रुचि भी पैदा होती है। प्रवेशांक के सभी रचनाकारों को मैं बधाई देता हूं।

''झलक'' को रंग रूप देने में राजभाषा अनुभाग के सदस्यों का प्रयास प्रशंसनीय है। झलक को सभी पाठकों के सामने प्रस्तुत करने के साथ ही हम उनकी राय व मूल्यांकन का स्वागत करते हैं।
हमें विश्वास है कि हमारे सम्मानित पाठक हमारे प्रयास को पहचानेंगे।

(डॉ. रविशंकर सी.एन.)
निदेशक

संपादक की कलम से

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और राजभाषा है। इसके राष्ट्रभाषा के स्वरूप और राजभाषा स्वरूप दोंनो पर समय-समय पर संगोष्ठियां एवं चर्चाएं होती रहती हैं। हिंदी भाषा की अपनी विशेषताएं हैं। लेकिन किसी भी भाषा का महत्व तभी है जब वह अधिक से अधिक प्रयोग में लाई जाए।

''झलक'' केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौदयोगिकी संस्थान की गृह पत्रिका है जो हिंदी को नई गति देने के उद्देशय से शुरू की गई है। ''झलक'' में कविता, कहानी, अनुवाद, यात्रा वृत्तांत, आलेख आदि शामिल किए गए हैं।

संस्था के कर्मचारी हिंदी के प्रति रूचि रखते हैं और हिंदी में काम-काज करते हैं। ''झलक'' संस्था के कर्मचारियों की सृजनात्मक लेखनी को उजागर करने का एक जरिया है। ''झलक'' दैनिक कार्यों में व्यस्त कर्मचारियों के लिए, अपनी भावनाओं, विचारों एवं अनुभूतियों को व्यक्त करने का एक माध्यम बन जाती है।

झलक २०१५ प्रवेशांक सुधी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे खुशी हो रही है।

डॉ. संतोष अलेक्स

संपादक मंडल

१. **डॉ. पी. प्रवीण,**

प्रधान वैज्ञानिक, मत्स्यन प्रौद्योगिकी प्रभाग

२. **श्री. अंकुर नगोरी,**

वैज्ञानिक, अभियांत्रिकी प्रभाग

३. **श्री. अनुज कुमार**

वैज्ञानिक, मत्स्य संसाधन प्रभाग

४. **डॉ. पंकज किशोर**

वैज्ञानिक, गुणता आश्वासन एवं प्रबंधन प्रभाग

५. **डॉ. संतोष अलेक्स,**

वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, हिन्दी अनुभाग

६. **डॉ. पी. शंकर**

वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, हिन्दी अनुभाग

अनुक्रम

आमुख
संपादक की कलम से
संपादक मंडल

यात्रानुभव
कश्मीर की सैर : उषाराणी जी.
तवांग की सैर : शिबाशीस गुहा

लेखक परिचय
तकषी शिवशंकर पिल्लै : जय संतोष

कविता
उमंग : पी. कृष्णकुमार
खुशी : पी. जंयती
सड़क : गौरीशंकर साहू
खामोशी का संगीत : आशालाता ए.
मां : सूर्या षाजी

चिट्ठी
केरल एक अनुभव : नताशा नायक

आलेख
विदेशों में स्थित
हिंदी अध्यापन केंद्र : जी. आशा गोपालन
राजभाषा हिंदी : संक्षिप्त परिचयः जी.एन. शारदा

मौलिक कहानी
वह क्या चीज़ थी : नारायण के.के.

अनूदित कहानी
राचीअम्मा : उरूब

अनूदित संस्मरण
शांताम्मा : वैद्या आनंदवर्धन

कश्मीर की सैर

उषारानी जी.
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
जीवरसायन एवं पौष्टिक प्रभाग

दिनांक १२.५.०८ को हमारा परिवार कश्मीर के लिए रवाना हुआ। सुबह साढे चार बजे अलार्म रख कर सो गए। बच्चे इतने उतावले थे कि सुबह अलार्म के बजने के पहले ही वे उठ गए। सुबह छह बजे टैक्सी आयी। हमारे घर के बगल के मंदिर में पूजा कर हम कार में नेडुंबाशेरी हवाई अडडे की ओर रवाना हुए। हमारी फ्लाईट साढे नौ बजे की थी। तकरीबन साढे ग्यारह बजे हम दिल्ली के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अडडे पर पहुंचे।

हवाई अड्डे से हम होटल अशोक इंटरनेशनल पहुंचे। कमरा नं ३०२ से बाहर दिल्ली शहर दिखता था। अटैची और बाकी सामान रखकर हम खाने के लिए रेस्तेरां पहुंचे। जब तक हमने लंच पूरा की हमें घुमाने के लिए टैक्सी का ड्राइवर आ गया। मेरे पति कमरे में जाकर कैमरा और अन्य जरूरी चीजें ले आए और हम टैक्सी से रवाना हुए। हमारा पहला पडाव पार्लियमेंट हाउस था, वहां से हम सरोजिनी मार्केट के लिए निकले। वहां हमने शापिंग की। वहां से हम करोल बाग, मकनोडेल्ड आदि घूमकर शाम को होटल पहुंचे।

दूसरे दिन सुबह नाश्ता कर हम हवाई अड्डे की ओर निकले। हमारी खुशी अब दुगनी हो गयी कि हम श्रीनगर के लिए निकल रहे हैं। हमारी फ्लाईट ११.४५ को थी। हमारी हवाई जहाज १२.४५ को श्रीनगर हवाई अड्डे पर उतरी। हमने टैक्सी ली और सेवोय हाउसबोट पहुंचे। हाउसबोट काफी सुंदर और आकर्षक था। हमने कुछ समय के लिए आराम की। डल झील में स्थित हाउसबोटों से हमने कुछ शॉल और अन्य चीजें खरीदीं। शाम हो चुकी थी। हाउसबोटों में बत्तियां जल उठीं। इन बत्तियों की रोशनी डल झील पर पड़ती थी और ऐसे में डल झील बहुत खुबसूरत दिखती थी। रात को हम रोटी और पुलाव खाए और जल्दी सो गए चूंकि हमें सुबह निकलना था।

सुबह हम सोनमार्ग के लिए रवाना हुए। सोनमार्ग श्रीनगर से १०० किलोमीटर की दूरी पर

थी। कुछ ही देर में हम श्रीनगर छोड़ सोनमार्ग के रास्ते चले। रास्ते में चिनार के पेड़ दिखाई दिए। रास्ते के छोर पर स्थित घरों के छत तिरछे थे। यह इसलिए था कि बर्फबारी के समय आसानी से बर्फ पिघले और पानी नीचे की ओर गिर पड़े। तकरीबन ७० किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद सड़क दूरी दो तरफ थी। बायीं ओर की सड़क लेह व लददाक की ओर जाती थी और दायीं ओर की सड़क सोनमार्ग की ओर। यहां से सोनमर्ग के रास्ते में दोनों तरफ बर्फ से ढ़के पहाड़ थे। हमने गाड़ी से उतर कर कुछ तस्वीर खींची।

कुछ देर के बाद हम सोनमार्ग पहुंचे। वहां सैलानियों की काफी भीड़ थी। बर्फ की पहाड़ी पर चढने के लिए हमें ऊनी कपड़े एवं जूते भाड़े पर खरीदने थे। सो हमने खरीदे और स्लेडजिंग का मजा उठाया। वहां के लोग हमें स्लेड्ज पर बिठाकर खींचकर पहाड़ की चोटी पर ले जाते। चोटी पर हमने बहुत सारे फोटो खींचे। चोटी पर छोटी दुकानें थी जहां पानी, चाय एवं बिस्कुट मिलता था। पहाडी से नीचे की ओर उतरने का मजा कुछ और ही था। जब हम नीचे पहुंचे तो भीड़ ज्यादा हो गई थी। गाड़ी में हम वापस श्रीनगर की ओर चले।

अगले दिन हम हाउसबोट से चेक आउट कर होटल सन शाइन में कमरा बुक कर ली। सारा सामान रखने के बाद हम जरूरी चीजों को लेकर गुलमर्ग के लिए निकले। गुलमर्ग श्रीनगर से ६० किलोमीटर की दूरी पर थी। गुलमर्ग के रास्ते पर कई जगह हमने सी आर पी एफ जवानों को देखा, जो बंदूक थामे खडे थे। चौक को पार कर कुछ दूर तक रास्ता खराब था। वहीं रास्ते के दोनों छोर पर क्रिकेट के बैट बेचनेवाली दुकानें थी। कुछ देर बाद हमें गुलमर्ग की पहाड़ियां दिखाई दीं। हिम से ढकी पहाड़ियों का नजारा कुछ अलग ही था।

लगभग डेढ घंटों के बाद हम गुलमर्ग पहुंचे। गाड़ी जहां पार्क की जाती है वहां से टिकट काउंटर तक के रास्ते तक पहुचने के लिए घोडे का उपयोग किया जा सकता था या फिर पैदल। चूंकि हमारे पास काफी समय था और मौसम सुहाना था हमने चलने का निर्णय लिया। गुलमर्ग में रोप वे पर चढने के लिए दो पोएंट थे। पहले पोएंट के लिए ६०० रुपए की टिकट थी और दूसरे पोएंट के लिए १००० रुपए। हमने ६०० रुपए की टिकट निकाली। रोप वे दो मिनट के लिए रुकती है, इतने में हमें जल्दी से केबिन में घुसकर बैठना पडता था। हम लोग केबिन में बैठ गए। बीस मिनट के बाद पहला पोएंट आया। वहां उतरे, सामने देखा तो पूरा पहाड़ बर्फ से ढका हुआ था।

सैलानियों की काफी भीड़ थी। वहां पर बच्चों व बड़ो के लिए स्नो स्कूटर, स्लेड्ज आदि कई प्रकार के मनोरंजन के साधन थे। फोटोग्राफरों की भीड़ थी। हर कोई फोटो उठाने की बात करता है। हमने वहां काफी समय बिताया। चूंकि टिकट में वापसी का समय उल्लखित था, हमें लौटना पड़ा। शाम को हम वापस होटल पहुंचे।अगले दिन श्रीनगर का लोकल साइट सीयिंगं ट्रिप था। हम हजरतबल मस्जिद, मुगल गार्डेन्स, शाही महल, शंकराचार्य मंदिर आदि घूमकर शाम को वापस होटल पहुंचे। शाम को हमनें थोड़ी बहुत शॉपिंग की।

अगले दिन जेट एरवेज की विमान से हम दिल्ली पहुंचे। दिल्ली से हमारी फ्लैट शाम को छह बजे को थी। हम रात को नौ बजे वापस नेडुंबाशेरी हवाई अडडे पहुंचे। आज भी जब कश्मीर की बात उठती है तो हम अचानक कश्मीर यात्रा के सुखद क्षणों को याद करते हैं।

तवांग की सैर

शिवाशीष गुह
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
विस्तार, सूचना एवं सांख्यिकी प्रभाग

मैं पिछले साल अरुणाचल प्रदेश के तवांग घूमने गया। तवांग का प्राकृतिक दृश्य मुझे बहुत भाया। हमारी यात्रा आसाम के तेज़पुर से शुरू हुई। पहले हम भायूकपॉंग पहुँचे, भायूकपॉंग अरुणाचल प्रदेश का प्रवेश बिन्दु है। वहाँ की पवित्र नदी कामेंग के संग हम आगे बढते गए। कुछ देर बाद हम टिपि पहुँचे, जहॉं आर्किड की कई तरह की प्रजातियॉं है। उसके बाद हम बमडिला पहुँचे जो पश्चिम कामेंग जिला का मुख्यालय है। वहॉं हमने क्राफ्टस सेंटर, मोनास्ट्रिस, जादूघर देखकर दिरांग के लिए रवाना हुए। दिरांग में रात को याक शोध केंद्र के गस्ट हाउस में रूके। अगले दिन नीलगाय पालन स्थल घूमने गए। तवांग के पथ पर सेला पास आता है। यह पृथ्वी की द्वितीय उच्च पास है जहाँ गाड़ी जा सकती है। वहॉं स्फटिक नील पानी का स्वाभाविक सरोवर भी है। इस सरोवर का प्राकृतिक दृश्य इतना मनोरम था कि मुझे लगा कि मैं स्वर्ग में हूँ। इतना शांत वातावरण मेरे तन-मन को मोहित कर दिया। सेला पास के कुछ ही दूरी में शीतल जल मत्स्य अनुसंधान और इन्द्रधनुष ट्राउट मत्स्य हैचरी का केन्द्र है जहॉं शीतल जल की मछली पकड़ी जाती है। अंत में हम तवांग पहुँचे।

तवांग एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। सत्रह सौ शाताब्दी में मेरा लामा लॉर्ड गियाल्टसो द्वारा प्रतिष्ठित तवांग मोनास्ट्रि एशिया के द्वितीय वृहत्तम मोनास्ट्रि है और जिसके अंतर्गत १७ गोम्पाऑं है। अर्गयेल्लिंग छठी दिलाई लामा का जन्मस्थान है। यह स्थान भी बहुत पवित्र है। तवांग अपने स्वाभाविक सरोवरों के लिए बहुत ही विख्यात है। यह सांगेतस्टार, बर्फीली कबूतर और मास्क हिरणो के लिए मश्हूर है। तोसो सरोवर उत्तम प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाने जाते है। अंतिम दिन हम माधुरी दीक्षित सरोवर होकर चीनी सीमांत पास देखने के लिए रवाना हुए। रास्ते में हमने भारतीय सेना के बंकर देखे, जिसे देखकर भारतीय सेना के प्रति श्रद्धा का भाव उत्पन्न होता है। थोड़ी दूर जाने के बाद बर्फबारी होने लगा। बर्फबारी मेरे लिए एक बहुत ही रोमांचकर अनुभव था। हम सब गाड़ी से बाहर निकलकर बर्फ के गोले के साथ खेलने लगे। फिर बर्फबारी की गति इतनी बढ़ गई थी कि हम और आगे जा नहीं पाए, वापसी में देखा कि सारे बंकर बर्फ से ढके होने के कारण इगयू जैसे लग रहे थे।

उसके दूसरे दिन जब हम तवांग छोड़कर वापस आ रहे थे तब का प्राकृतिक दृश्य देखते ही बनता था। तवांग जाते समय जो हरी पहाड़ी हमें दिख रही थी, वापसी में वह सफ़ेद पहाड़ी हो गई थी। बर्फबारी के वजह से सारे पेड़ पौधें बर्फ से ढके हुए थे। सारे पेड़ बर्फ के पिरामिड जैसे लग रहे थे। नहरों का पानी भी जमकर बर्फ हो गया।

मेरे लिए मेरी तवांग यात्रा हमेशा यादगार रहेगा क्योंकि मौसम में इतनी जल्दी बदलाव के कारण उसके प्राकृतिक दृश्य में एक अभूतपूर्व बदलाव तुरंत आ जाता है, जिसका स्वर्गीय मज़ा हम लेते हैं।

तकषी शिवशंकर पिल्लै

जय संतोष
w/o संतोष अलेक्स

केरल व केरलीय साहित्य को विश्व साहित्य के मानचित्र पर पहुँचाने वाले ज्ञानपीठ पुरस्कृत उपन्यासकार तकषी शिवशंकर पिल्लै का समकालीन भारतीय साहित्य में अद्वितीय स्थान है।

कहानी कहने की अद्भुत क्षमता रखने वाले श्री तकषी का जन्म १९१२ में कावालम में हुआ। कावालम से कुट्टनाड आकर बसे तकषी ने वहां के कृषकों की कहानी कही। तकषी की पहली कहानी ''पावंगल'' (साधुलोग) १९२९ में प्रकाशित हुई। १९३५ में प्रकाशित उनकी कहानी संग्रह की सबसे चर्चित कहानी थी ''वेल्लपोक्कतिल'' (बाढ में)। प्रकृति को पात्र के रूप में चित्रित इस कहानी ने साहित्य जगत में तहलका मचा दिया। लीक से हटकर लिखी गई यह कहानी उनकी प्रतिभा का परिचायक है।

तकषी की प्रमुख रचनाएँ हैं ''त्यागतिन्डे प्रतिफलम'', ''औसेपिन्डे मक्कल'', ''परमारथंगल'', ''रंडीडंगषी'', ''तोट्टीयुडे मकन'', ''चेम्मीन'', ''एणीपडीकल'' और ''कयर''।

''एणिपडीकल'' (सीढ़ियाँ) में फयूडलिजम का झलक मिलता है तो ''चेम्मीन'' (झींगा) पुरक्काड सागर तट के मछुवारों की कहानी कहती है। ''तोटियूडे मकन'' में भंगियों की दुःख भरी कहानी है तो कयर (रस्सा) एक प्रेम कहानी है।

''चेम्मीन'' (झींगा) उपन्यास करुतम्मा और परीकुट्टी की प्रेम कहानी होते हुए भी गरीबों की दुःख भरी कहानी है। इसमें पुरक्काड के मछुवारों का जीता जागता चित्रण मिलता है। लेखक ने पलनी, चंबन कुंज, चक्की, पंचमी आदि सहायक पात्रों की सृष्टि की हैं, लेकिन पैसा कमाने की लालच व जिद्ध पर अड़े चंबन कुंज, तकषी का असाधारण पात्र है।

समकालीन भारतीय उपन्यास में ''कयर'' (रस्सा) का अद्वितीय स्थान है। इसमें कुट्टनाड के कृषक परिवारों की कहानी है। कल से होकर, आज से गुजरते हुए कल की ओर बह रही नदी के समान कहानी एक पीढी से दूसरी पीढी की ओर गुजरती है। यह उपन्यास तकषी को सी. वी. रामनपिल्लै के समकक्ष लाता है।

विभिन्न जात के, रीतिरिवाजों के अनेक परिवारों की एक श्रृंखला कयर में देखी जा सकती है। इस उपन्यास में एक कहानी के भीतर कई कहानियाँ हैं। हरेक कहानी रस्सा है जो दूसरे से जा मिलती है। इस प्रकार अनेक रस्सा मिलकर एक लंबी कहानी बनती है। चेम्मीन जैसे आसानी से इस उपन्यास का अनुवाद नहीं किया जा सकता।

मिट्टी व मनुष्य का संवेदनशील संबंध उनकी सारी तीव्रताओं को लेकर ''कयर'' में विद्यमान है। तकषी के मन में बाढ एक प्रतीक के रूप में भरा है। उपन्यास का अंत बाढ से होता है। कुट्टनाड गॉंव को भूतकाल से आज के यर्थाथ की ओर लाने के लिए व मिट्टी और जिंदगी की व्याख्या के लिए इस प्रतीक का उपयोग किया गया है।

तकषी की सबसे चर्चित कहानी ''वेल्लपोकत्तील'' (बाढ में) में और ''कयर'' (रस्सा) में बाढ प्रतीक है। ''वेल्लपोकतिल'' में बाढ सभी को डूबो देती है। गॉंव के ऊँचे स्थान पर स्थित मंदिर के मूर्ति के कंठ तक पानी पहुँचती है। जहॉं देखे वहॉं पानी ही पानी है। गॉंववाले तट की खेज में दौड रहे हैं। मनुष्य को प्रकृति के चुंगल से कोई बचा नहीं पाने की अवस्था। लेकिन ''कयर'' में जो बाढ का चित्र है वह ''वेल्लपोक्कतिल'' से भिन्न है। ''कयर'' में चित्रित बाढ में तट की खोज में कोई नहीं दौडता। इसके विपरीत लोग खेतों में पानी की मात्रा में वृद्धि की इच्छा जाहिर करते हैं। ऐसा क्यों? इसका उत्तर तकषी ''कयर'' में देते है। आज कुट्टनाड के खेतों में वर्षकाल के समय बारिश का पानी खेतों में न घुसने के लिए छोटे-छोटे बॉंध बनाकर पानी को रोक दिया जाता है। यह सरकार की कृषि नीति का परिणाम है। गॉंवों का नागरीकरण हो रहा है। मानव के स्वार्थ लाभ के लिए प्रकृति का परिष्कार।

कुट्टनाड के कृषक, पुरक्काड के मछुवारे, आलप्पुषा के भंगियों का रहन सहन, वेश-भूषा और रीतिरिवाजों का विस्तृत चित्रण तकषी के कहानी व उपन्यासों में चित्रित है। ''भंगी का बेटा'' परंपरागत पेशे से छुटकारा पाने की कोशिश के साथ-साथ ब्याज पर पैसा देकर भौतिक सुखसविधाओं को पाने की इच्छा रखता है। ''एणीपडीकल'' (सीढियां) का केशव पिल्लै को भी आर्थिक रूप से संपन्न होने की आशा है। ''चेम्मीन'' का चंबनकुंज नाव और जाल खरीदने के लिए मेहनत करता है। आहिस्ता-आहिस्ता वह रुपया कमाने लगता है और उनका यह आग्रह तीव्र होता जाता है। इस दौड़ में वह जिंदगी के मूल्यों को भी कुचल देता है। ''औसप के बेटे'' उपन्यास में भी यह तथ्य उभरता है।

मनुष्य में पैसा कमाने की इच्छा, लालच, ऊचाईयों को छूना, बड़ा सा घर बनाना, जमीन जायदाद खरीदना आदि इच्छाएँ होती है। यह स्वाभाविक है। कुछ लोग इसे पाने के लिए सही मार्ग चुनते हैं तो कुछ लोग गलत रास्ते से इसका अर्जन करते हैं।

तकषी अपने उपन्यासों में इस स्थिति का ध्वन्यात्मक रूप में चित्रित करते हैं। जिसके पास दस रुपया है वह सौ बनाना चाहता है। जिसके पास सौ रुपया है वह उसे हज़ार बनाना चाहता है।

१९३० में तकषी की रचनाएँ आम थी। १९४० में पश्चिमी साहित्य के प्रभाव से रचनाओं में साहित्यक आलोचना का झलक मिलता था। १९५० में रचनाओं में जिंदगी के मूल्यों की तलाश थी तो १९६० में मानव जीवन की त्रासदी का चित्रण है। १९७० तक पहुँचते-पहुँचते उनकी रचनाएँ मास्टर पीस बनीं।

पचास साल के निरंतर लेखनी से तकषी ने अपनी साहित्य प्रतिभा का परिचय दिया। जिंदगी को अतिसूक्ष्म रूप में समझने की तकषी की क्षमता ने ही उन्हें महान लेखक बनाया। उनकी भाषा सरल थी। अपनी कहानियों के बारे में वे खुद कहते हैं मेरी कहानियों में प्लोट नहीं है, पात्र निर्माण नहीं है, व्याख्या नहीं है। न सुंदरियॉं है न कुरुप। आदर्श पुरुष नहीं है, दुष्ट भी नहीं। केवल मनुष्य है।

इसमें दो राय नहीं कि तकषी शिव शंकर पिल्लै समकालीन मलयालम साहित्य का शीर्षस्थानीय उपन्यासकार है। कुट्टनाड के लोगों के स्वण्न व जिंदगी के ताने-बाने से विश्व साहित्य की रचना करनेवाले तकषी निश्चय ही महान लेखक हैं।

उमंग

पी. कृष्ण कुमार
सहायक प्रशासनिक अधिकारी

उमंग है नील क्रांति की
देश की तटीय सागर संपत्ती की
सपने नीलमय सागर की
साकार हो सपने प्रगति की।

उम्मीदें नील क्रांति की
हजारों मील तटीय संपत्ती
जो देती करोडों को रोज़गार
साकार हो सपने विकास की।

आशाएं नील क्रांति की
नयी दिशायें मत्स्य प्रौद्योगिकी की
मूल्य वर्धित उत्पादों के निर्माण की
तन्दुरुस्ती तय हो हर नागरिक की।

यादें अच्छी हरित क्रांति की
सफल अन्तरीक्ष अभियानों की
रक्षाअनुसन्धान के विजयों की
साकार हो देश की मज़बूती।

विज्ञान एवं विकास की कार्यवृत्ति
जरूर लानी क्रांतियों की ज्योति
विजय दिलाती हर परिश्रम की
सफल हो उमंगें विकसित भारत की।

खुशी

जयंती पी.
वैज्ञानिक,
विस्तार, सूचना और सांख्यिकी प्रभाग

खुशी, खुशी कहॉं हो, तुम ?
वे सदाबहार दिन
जब हम स्वच्छ हवा में सांस लेते थे;
मीठा पानी पीते
स्वादिष्ट खाना खाते
स्कूल तक चलके जाते
पेड़ों के नीचे पढते
तेज धूप में खेलते
परिवार एवं दोस्तों के साथ समय बिताते, गप लड़ाते
खुलकर हंसते
तुम्हारी उपस्थिति से दिल खुश होता था
वर्तमान पीढ़ी को, यह खुशी मिल रही है, क्या ?
आज, पूर्ण तनाव और हड़बड़ी है
ऐयाशी और आडम्बरी जीवन है
अब जीवन बिल्कुल डिजिटल, यांत्रिक और समयबद्ध है
परिवर्तन स्थाई है, आज ज़िंदगी में तुम अनुपस्थित हो।
मैं उन दिनों का सपना देख रही हूँ
ताकि असली खुशी का आनंद ले लिया जाए

सड़क

गौरी शंकर साहू
निम्न श्रेणी लिपिक
प्रशासन प्रभाग

रोज़ सुबह इसी सड़क पर,
उदास आंखें, खामोश होंठ,
बलखाते बाल, खिलखिलाता चेहरा
मोह नहीं, क्रोध नहीं,
रोग नहीं, संजोग नहीं,
लोभ नहीं, भोग नहीं,
खेल नहीं, मेल नहीं,
बिरहा का भी कोई बोध नहीं,
देह वही, भेष वहीं,
रंग वही, ढंग वही,
वस्त्र वही, शस्त्र वही,
कुछ देर पीछे मुड़ कर देखता रह गया
सड़क वही, तस्वीर वही.

खामोशी का संगीत

डॉ. आशालता
प्रधान वैज्ञानिक,
विस्तार, सूचना और सांख्यिकी प्रभाग

कई फूलों को बिछाकर
मैं तुझसे निवेदन कर रही थी
तुने कहा कि तू रूपों से परे हैं
कितने फूल देने पर भी
तू मुझे आलिंगन नहीं कर सकता
केवल तुझ तक पहुँचने के लिए
मै घास का मैदान बन विकसित हुई
तेरे हाथों में समा जाने के लिए
अहिस्ता से मैं एक बगीचे में
तब्दील हो रही थी
तू मेरे चारों ओर बहती नदी
मैं तेरे लहरों का संगीत
ठंडी हवा में मेरी बांसुरी की ध्वनि
एवं तेरी लहर ने समा बांधा
बेहोश चांदनी रातों में
परी उड़ आए
तब केवल तेरे लिए मैंने
मेघों को आकर्षित किया
जिन मेघों ने मेरा आलिंगन किया
वे बारिश बन ऊपर गिरने पर
तू फेन सा उड़ा
पागल सा
तू मेरी तरफ क्यों आया ?
धराशायी फूलों के पेड़ को
क्यों गुस्से में फेंका ?
कुचले बेलों व फूलों के ऊपर
तू निश्चल होकर गिर पड़ा
तेरे दिल की घडकन
मैं सुन रही थी
अब और बहना नहीं है
बहाव रुके लहरों में
बहते फूलों से सुगन्ध फैलने पर
हमने खामोशी के संगीत का आनंद
एक साथ उठाया

माँ

सूर्या टी. षाजी
D/o षाजी टी.एन.

दुनिया का पहला प्रेम ..... माँ
सबसे कीमती वरदान ..... माँ
धरती पर ईश्वर की कहानी ..... माँ
खुशियों के बाग में फूल ..... माँ

प्रकृति के सौंदर्य का पहला उपहार ..... माँ
कॉटों भरी राह में फूलों का एहसास .... माँ
खुशियों के अनमोल खजाने की राह .... माँ
प्यार और डॉट का खट्टा मीठा खेल ..... माँ

गैरों की दुनिया में अपनों का विश्वास ..... माँ
कुदरत की सम्पूर्ण व्यवस्थित व्यवस्था ..... माँ
सचमुच वो बचपन भी कितना नाजुक
और सच्चा था जिसमें माँ के प्रति
कितना प्यार था ....

केरल एक अनुभव

नताषा नायक
एस आर एफ
मत्स्य संसाधन प्रभाग

आदरणीय पिताजी,
सादर प्रणाम,

पूज्य पिताजी आपका पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई की आप ठीक है। मैं भी ठीक हूँ। आज मेरा पत्र केरल के अनुभव के बारे में है।

केरल जिसे प्रकृति का नायाब तोहफा कहा जाता है, इस राज्य के हर शहर और दूरदराज के गांव को भगवान के निजी देश के रूप में नवाजा गया है। यहॉं के दुर्लभ नगर एवं शांतता अपनी सारी खुबसूरती बयां करती है।
यहाँ के पुरुष हमेशा मुंडू पहनते हैं। हिंदी का ज्यादा प्रचार न होने के बावजूद भी यहां के लोगों का मेल मिलाप एक नया अनुभव है। केरल में पुप्टु, इडीयप्पम, उन्नी अप्पम, पायसम, केले के

चिप्स, मछली की बनी विभिन्न डिश, लाल चावल यहां के अतिविशिष्ट व्यजनों में से है। यह सारे व्यंजन मुझे घर में बनाये खाने की याद दिलाती है।

मुझे आपको बताने में अतिप्रसन्न्ता हो रही है कि मैं अपने कुछ खास दोस्तों के साथ केरल के मनमोहक बैक वॉटर घुमने गई थी। यहाँ के बैक वाटर में ढेर सारी मनमोहक हाऊस बोट देखकर मेरा मन मन्त्रमुगध हो गया। उसी के साथ-साथ मैने मुन्नार जो की प्राचीन एवं प्राकृतिक हिल स्टेशन है उसका भी आनंद उठाया। यह अत्यंत मनमोहक अनुभव था और मुझे घर परिवार याद आया।

केरल की बहुत सारी मीठी यादों को आपको बताने का दिल किया इसलिए मैंने यह पत्र लिखा।

शेष बातें घर आने पर बताऊंगी।

आपकी पुत्री

नताषा

विदेशों में स्थित हिन्दी अध्यापन केंद्र

आशा गोपालन
सहायक, प्रशासन

देश		केंद्र
१. अर्जेन्टीना	-	ब्यूनस आयस
२. आस्ट्रेलिया	-	कैनबरा, मैलबोर्न, सिडनी
३. आस्ट्रिया	-	वियना
४. बेल्जियम	-	ब्रुसेल्स
५. कनाडा	-	ब्रिटिश कोलंबिया, क्यूबेक, ओन्टारिओ यूनिवार्सिटी ऑफ विंडसर यूनिवार्सिटी ऑफ टोरेन्टो
६. चीन	-	पीकिंग, शंघाई
७. चेकोस्लोवाकिया	-	प्राह-चार्ल्स यूनिवार्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन लैंगवेजेज़
८. डेनमार्क	-	कोपेन हेगन
९. जर्मनी	-	बर्लिन, बॉन, फेंकफर्ट, फ्राइबुर्ग, गिस्सेन, गॉटिनन, हैम्बुर्ग, कोलोन कील, माइल्स, मारबुर्ग, म्यूनिख, सारलोद, टिरेंसवटी, हाइडिलबुर्ग, हेत्सबुर्ग, टेबिजन, लाइपाजिग़
१०. फिनलैंड	-	हेलसिंकी
११. फ्रांस	-	पेरिस
१२. हंगरी	-	ज़ेगेद, यूनवर्सिटी
१३. इटली	-	वेनिस, रोम
१४. जापान	-	टोकियो, ओसाका
१५. मैक्सिको	-	मैक्सिको
१६. नेपाल	-	काठमांडू
१७. नीदरलैंड	-	रापेनबुर्ग

१८. न्यूज़ीलैंड - डुनडिन
१९. नार्वे - ओस्लो
२०. पोलैंड - वसा
२१. कोरिया (दक्षिण) - सियोल, सोल विश्वविद्याल
२२. रूमानिया - बुखारेस्ट
२३. श्रीलंका - कोलंबो, पेराडेनिया
२४. स्वीडन - स्टॉकहोम, गायेनबर्ग, उपासलाई
२५. संयुक्त राज्य - कैलिफोर्निया, मैरिलैंड, होनोबुलू, पं, कैरोलिना, अमेरिका आरिज़ोना, कंसास, बर्कलेकैलिफोर्निया, लोंग बीच कैलिफोर्निया, हेवार्डकैलिफोर्निया, लॉस एंजेल्स कैलिफोर्निया, अर्बन शिकागो इलिनॉइस, एक आर्बर, मिशिगन, शिकागो इलिनॉइस, ईस्ट लैंगसिंग, मिशिगन, कलमाजू मिशिगन, रोचेस्टर मिशिगन, मिन्नियापोलिस मिशिगन, इथाका, न्यूयार्क, कोलंबिया, मिसूरी ब्रौंक्सविले, न्यूयार्क, रोचेस्टर न्यूयार्क, सिराक्यूज़ न्यूयार्क, ओहियो, नार्थ कैरोलिना, पैंसिलवेनिया, टेक्सास, शालोतविले, वर्जीनिया, स्वीट बिरियार वर्जीनिया, सीटल वाशिंगटन, डी.सी, (क) फॉरेन सर्विस, (ख) अमेरिका सर्विस, विसकान्सिन
२६. रूस - मास्को, लेनिनग्राड
२७. ताश्कंद - ताशकंद
२८. युगोस्वाकिया - जैगरब (अब सर्बिया में)
२९. ट्रिनीडाड - दो केंद्र है
३०. क्यूबा - क्यूबा

राजभाषा हिन्दी : एक संक्षिप्त परिचय

जी.एन. शारदा
साहायक, प्रशासन

हिन्दी भाषा को राजभाषा और राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त है। लेकिन हम में से कई लोग राष्ट्रभाषा के बारे में ज्यादा नहीं जानते। प्रस्तुत लेख में इस पर जानकारी देने की प्रयास कर रही हूँ। हिन्दी के कार्यालयीन भाषा का स्वरुप हमारे संविधान की देन है। हम सब जानते है कि २६ जनवरी १९५० को हमारा संविधान लागू किया गया। इसी क्रम में हम सभी के लिए यह जानना भी अनिवार्य है कि भारत के संविधान में राजभाषा हिन्दी को किस स्थान पर रखा गया है अर्थात राजभाषा हिन्दी के बारे में हमारा संविधान क्या कहता है, भारतीय संविधान के अनुच्छेद १२०, २१० तथा

३४३ से ३५१ में राजभाषा हिन्दी संबंधी प्रावधानों का उल्लेख है। आइए अब हम संक्षेप में यह जानें कि आखिर इन अनुच्छेदों में क्या कहा गया है। अर्थात् ये अनुच्छेद किस व्यवस्था से संबंधित हैं :

अध्याय १ संघ की भाषा :

अनुच्छेद १२० : संसद में प्रयोग की जानेवाली भाषा से संबंधित अनुच्छेद १२० है।

अनुच्छेद २१० : इस अनुच्छेद में विधान मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा का उल्लेख किया गया है।

अनुच्छेद ३४३ : संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप (International form of Indian numerals) होगा।

अनुच्छेद ३४४ : राजभाषा के संबंध में आयोग का गठन और संसद की समिति।

अध्याय २ प्रादेशिक भाषाएं :

अनुच्छेद ३४५ : राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं।

अनुच्छेद ३४६ : एक राज्य से दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राज्य भाषा।

अनुच्छेद ३४७ : किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध।

अध्याय ३ : उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि की भाषाः

अनुच्छेद ३४८ : उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा संबंधी।

अनुच्छेद ३४९ : भाषा से संबंधित कुछ विधियाँ आदि नियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया संबंधी।

अध्याय ४ : विशेष निदेश

अनुच्छेद ३५० : व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा के संबंध में।

अनुच्छेद ३५० : (क) प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएं।

अनुच्छेद ३५० : (ख) भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के लिए विशेष अधिकारी की नियुक्ति संबंधी।

अनुच्छेद ३५१ : हिन्दी भाषा के विकास के लिए निदेश :

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करें, जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ठ भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्र्यक या वांछनीय हो, वहॉं उसके शब्द भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणत : अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते

हुए उसकी समृद्धि करें।

राजभाषा के रूप में हिन्दी की संवैधानिक स्थिति का अनुच्छेदवार वितरण जानने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत के संविधान में किए गए, इन प्रावधानों से हमारी राष्ट्रभाषा और साथ ही साथ विभिन्न राज्यों की राजभाषा के रूप में हिन्दी का स्थान प्रमुख है। इसी व्यवस्था के अनुक्रम में १९६३ में राजभाषा अधिनियम लागू किया गया जो राजभाषा अधिनियम १९६३ (यथा संशोधित १९६७) के नाम से जाना जाता है। इसी क्रम में १९७६ में राजभाषा समिति राष्ट्रपति जी को अपनी सिफारिशों प्रस्तुत करती है जिन पर राष्ट्रपति जी आदेश जारी करते है, अब तक कुल नौ खंड राष्ट्रपतिजी को प्रस्तुत किए है और कुल आठ खंडों पर राष्ट्रपति जी के आदेश जारी हो चुके हैं। इसके अलावा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष राजभाषा कार्यान्वयन हेतु निर्धारित लक्ष्यों से संबंधित एक वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है। यहाँ इस बात का उल्लेख करना अनिवार्य है कि राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से भारत के विभिन्न राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों का क्षेत्रवार वर्गीकरण किया गया है। यह वर्गीकरण इस प्रकार है।

क क्षेत्र में शामिल राज्य/संघ राज्य क्षेत्र बिहार, छत्तीसगढ, हिमाचल प्रदेश, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली, राज्य अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र।

ख क्षेत्र में शामिल राज्य/संघ राज्य क्षेत्रः गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब तथा चंडीगढ, दमन और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।

ग क्षेत्र में शामिल राज्य/संघ राज्य क्षेत्रः क और ख क्षेत्र में शामिल राज्यों और राज्य या संघ राज्य क्षेत्र के अलावा शेष सभी राज्य और संघ राज्य क्षेत्र। इन तीन क्षेत्रों के लिए राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निर्धारित वार्षिक लक्ष्य भी अलग-अलग है। इसके साथ ही साथ प्रमुख जानकारी जो बांटने योग्य है वह यह है कि हमारे संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्तमान में कुल २२ भाषाओं को मान्यता प्राप्त भाषाओं के रूप में शामिल किया गया है। ये भाषाएं हैं,

हिन्दी, असमी, उडिय़ा, कन्नड, मलयालम, कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलुगु,पंजाबी, उर्दू, मराठी, संस्कृत, सिंधी, नेपाली, मणिपुरी बंगला, कोकंणी, मैथिली, डोगरी, संथाली और बोडो राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम तथा तत्संबंधी अन्य सभी प्रावधान जिन संस्थाओं/ कार्यालयों पर लागू होते हैं उनमें केद्रीय सरकारी कार्यालय, सर्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, सरकारी क्षेत्र की बीमा कंपनियां और राष्ट्रीकृत बैंक शामिल हैं।

अब बात आती है राजभाषा के रूप में हिन्दी का कार्यक्षेत्र अथवा प्रशासनिक व्यवस्था की। हिन्-दी को हमारे देश की राजभाषा के रूप में १४ सितंबर १९४९ को अपनाया गया तथा वर्तमान में राजभाषा कार्यान्वयन का दायित्व भारत सारकार, गृह मंत्रालय के अधीन कार्यरत राजभाषा विभाग

के पास है, यह अपने आप में एक स्वतंत्र रूप से कार्य करने वाला विभाग हे जिसमें सचिव स्तर के अधिकारी विभाग प्रमुख के रूप में कार्यरत हैं।

राजभाषा विभाग के कार्य

हमारे राजभाषा विभाग की स्थापना गृह मंत्रालय के एक स्वतंत्र विभाग के रूप में जून १९७५ में की स्थापना की गई थी। उसी समय से यह विभाग संघ के सरकारी काम काज में हिंन्दी का प्रगामी प्रयोग बढाने के लिए प्रयासरत है। भारत सरकार (कार्य आबंटन) नियम १९६१ के अनुसार राजभाषा विभाग से निम्न लिखित कार्य सौंपे गए हैं।

१) हमारे संविधान में राजभाषा से संबंधित उपबंधों तथा राजभाषा अधिनियम १९६३ के उपबन्धों का कार्यान्वयन, उन उपबन्धों को छोडकर जिनका कार्यानवयन किसी अन्य विभाग को सौंपा गया है।

२) किसी राज्य के उच्च न्यायालय की कार्यवाही में अंग्रेजी भाषा से भिन्न किसी अन्य भाषा का सीमित प्रयोग प्राधिकृत करने के लिए राष्ट्रपति का पूर्व अनुमोदन।

३) केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के लिए हिन्दी शिक्षण योजना और पत्रपित्रकाओ और उससे संबंधित सभी साहित्य के प्रकाशन सहित संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रग्रामी प्रयोग से संबंधित सभी मामलों के लिए केन्द्रीय उत्तरदायित्व।

४) संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित सभी मामलों में समन्वय, जिनमें प्रशासनिक शब्दावली, पाठ्य विवरण, पाठ्य पुस्तकें, प्रशिक्षण पाठ्यक्रम और उनके लिए अपेक्षित उपस्कर (मानकीकृत लिपि सहित) शामिल हैं।

५) केन्द्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा का गठन और संवर्ग प्रबंधन।

६) केन्द्रीय हिन्दी समिति से संबधित मामले।

७) विभिन्न मंत्रालयों/विभागों द्वारा स्थापित हिन्दी सलाहकार समितियों से संबंधित कार्य का समन्वय।

८) केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो से संबंधित मामले।

आशा है कि यह लेख कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी के महत्व को समझने में उपयोगी रहेगा।

वह क्या चीज़ थी

नारायण के.के.
तकनीकी अधिकारी
अभियांत्रिकी प्रभाग

यह कहानी करीब तीस साल पुरानी है। तब मैं १०-१२ साल का था। हमारे गांव में ज्यादा विकास नहीं हुआ था। मैं अपने मां-बाप और बहन के साथ एक बड़ा लेकिन पुराने घर में रहता था। पिताजी सरकारी कर्मचारी थे। वे बाहर नौकरी करते थे। महीने में एक बार आते थे।

जब पिताजी घर पर थे तो उनके दोस्त मिलने आते थे और उसमे एक अंकल को मैं कभी भूल नहीं सकता। उनके पास बहुत बड़ा बंदूक था। जब हम सो जाते तो पिताजी अंकल के साथ रात में जंगल में जाकर शिकार कर मांस ले आते थे। मेरे घर के सामने लंबा चौड़ा खेत था। खेत का रास्ता आगे पहाड़ की तरफ जाता था और वहां से जंगल शुरू होता। उसी जंगल में जाकर पिताजी और अंकल शिकार करते थे।

एक दिन की बात है। छुट्टी का दिन था और अकेले में रहकर मैं बहुत सुस्त महसूस कर रहा था। बदूक वाला अंकल अचानक एक दिन शाम को आया। पिताजी भी उस दिन घर पर थे। मुझे मालूम हुआ कि आज शिकार पर जानेवाले है। मेरा भी दिल किया कि मैं उसकें साथ जाऊं। मैंने पिताजी को बताया तो पहले मना किया, फिर पिताजी मान गए। अंकल मानने के लिए तैयार नहीं थे। कहा कि बच्चे वहां जा नहीं सकते। पिताजी ने जब कहा कि वे मेरा ख्याल रखेंगे तो मान गए।

शाम हो गयी। आसमान अपना रंग बदल दिया। मैं यह सोच रहा था कि हम कब निकलेंगे। अंत में पिताजी और अंकल कमरे से बाहर आए। पिताजी एक थैली लिए हुए थे और अंकल ने बंदूक ली। मैं भी तैयार था और मुझे पानी का बोतल दिया।

हम तीनों खेत में चल रहे थे। आगे अंकल बीच में मैं और पीछे पिताजी। शाम होते-होते हम खेत पार कर पहाड़ के पास पहुँच गए। अधेरा हो रहा था और अंकल ने मुझे कहा कि संभालकर चलना कहीं कुछ हिल रहा है तो कहना, मैंने सिर हिलाया। अब असली शिकार होने जा रहा था। बंदुक निकाल कर निशाना लगाता हुआ अंकल, बीच में डरता हुआ मैं और मेरे पीछे पिताजी। संभलते संभलते हम चलने लगे। तकरीबन एक या दो घंटे तक ऐसे चलते रहे। कुछ जानवरों की आवाज सुनाई दी। मुझे डर लग रहा था। अब हम एक बड़े पेड़ के नीचे पहुंचकर रुके, पानी पी। कुछ देर तक वहां रूको। कोई शिकर नज़र नहीं आया। पिताजी बोला आज तो बेकार हुआ। ''मै निराश हूँ, चलो वापस चलते हैं''। अंकल बोला और हम वापस चलने लगे।

पहाड़ उतर कर हम खेत की ओर पहुंचे। घना अंधेरा था। टॉर्च की रोश्नी के बिना कुछ भी दिखाई नहीं दी। हम आगे बढे। अचानक दो आखें दिखाई दी। अंकल ने निशाना साधी और बंदुक चलाई ''ठो'' दोनों आंख गायब हो गए। पिताजी और अंकल जल्दी से आगे निकले वहां कोई जानवर नज़र नहीं आया।

हम लोगों ने फिर चलना शुरूकिया। पिताजी ने मुझे संभालकर चलने के लिए कहा। थोड़ी दूर चलने के बाद फिर दो आंखें दिखाई दी। अंकल ने गोली चलाई इस बार भी कोई जानवर नहीं था। अंकल और पिताजी पिछले बार की शिकार के बारे में बात करने लगे।

इतने में उन्हें मेरे पीछे दो आँखे दिखाई दी। मुझे संभालने के लिए कहते हुए अंकल ने गोली चलाई। रास्ते में नाले पर फिसलकर अंकल गिर पडा। उसके हाथ से गोली चली। गोली मेरे कान में लगी। खून बह रहा था। अंकल ने जल्दी से रुमाल निकालकर बांधा। उन्होंने कहा ''बच गया''। मुझे ''शोले'' फिल्म से गब्बर सिंह का डायलोग याद आया। ''बच गया साला'', हम लोग घर की ओर चले। तब भी मुझे लगा रहा था कि दो आंखें हमारी पीछा कर रही थी। जैसे-तैसे हम घर पहुंचे। घर का फाटक खोलकर अंदर प्रवेश किया तो अचानक आवाज़ सुनाई दी। मुझे लगा कि कोई कुएँ में कूद पड़ा।

हम लोग खाना खाकर सो गए। कई साल बीत गए मुझे अब भी समझ में नहीं आया आखिर वह क्या चीज़ थी?

राचीअम्मा

मूल मलयालम : उरूब
हिंदी अनुवाद : **संतोष अलेक्स**
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

ग्यारह सालों के बाद राचीअम्मा से मिला तो आश्चर्य इस बात की नहीं था कि वह बदल गई थी बल्कि इस बात को लेकर था कि वह बदल भी सकती थी।

नीलगिरि से लौटने के बाद कई बार मुझे राचीअम्मा याद आई। कभी नहीं सोचा था कि चट्टान सा शरीर एवं उसका दृढ निश्चय मन से कभी मिटेगा। लेकिन समय नामक मजाक में सब कुछ मिट जाता है। फिर भी मैं कभी कबार उसे याद करता था।

राचीअम्मा की चूड़ियों के आवाज से उसे पहचाना जा सकता है। हल्के पीले रंग के आकाश के तले दिखाई देती हरी पहाड़ियों का ताकत एवं कमनीयता से उसकी याद आती है।
वया यह वही राचीअम्मा है ?

मैंने दुबारा उसकी ओर देखा। उसकी काली उंगलियों के पोर की नाखूनें साफ व आकर्षक थी। आँखें व नाक वैसे के वैसे ही थी। वह हँसती तो लगता था कि अंधेरे में कोई टॉर्च जला रहा है।

शायद टॉर्च की बैटरी में पहले जैसा ताकत नहीं रहा। उसके दो एक बाल पके हुए थे। ग्यारह साल बीत गए। फिर भी राचीअम्मा में इतने ही बदलाव आए। यह सोचनेवाली बात थी। मिसिस नायर ने याद दिलाई राचीअम्मा, याद है ?

मैंने जवाब नहीं दी। मुस्कुराया।

राचीअम्मा को मुझसे मिलाने की जरूरत नहीं थी। मैं वयनाड के नीलगिरी में नौकरी के लिए पहुंचा। चार ही दिन हुए थे, तब वहां कोई होटल नही था। छोटी मोटी किराने के दूकानें थी। वहां एक दुकान था जो चाय के बागानों में काम कर रहे मजदूरों को लूटते और तस्करी के लिए सहायता प्रदान करता था। वहां से खरीदे साबुन से नहाने पर शरीर से मैल ठीक से नहीं छूटता।

मैं कहां पर रहूँगा ? कहां से भोजन करूँ? मित्रों ने एक घर एवं एक रसोईए का इंतजाम किया। मैं उस मकान को घर एवं लड़के को रसोइया कहना पसंद करता हूँ।

मैं ऊर्जवान रहना चाहा। पता नहीं ज़िदगी में क्या-क्या होनेवाला है ? तीसरे दिन मैंने मां को खत लिखा, मैं कुशल हूँ, अच्छी जगह है, अच्छे लोग हैं। खत पर लकड़ी के सीलिंग से दीमक गिर रहे थे।

इतने में राचीअम्मा आई। बाड़े पर खिले जंगली पौधों को हटाती हुई आंगन में खड़े होकर उसने पुकारा अरे,छोकरे।

वह लड़का लकड़ी काट रहा था और उसको यह पुकार पसंद नहीं आया। उसने कोई जवाब नहीं दी।

तेरा मालिक किधर है ?

''क्यों ?''

बात तुमसे नहीं उनसे करनी है, घर पर है क्या ?

''हाँ।''

बुलाओ, जंगली बेल तोडते हुए उसने कहा।

मैं ख़िडकी से यह सब देख रहा था। लगा कि इसे किसी पत्थर के चट्टान ने जन्म दी हो।

लड़के ने जब मुझे बताया तो मै आंगन की तरफ आया मानो मैंने उनकी बातों को सुना नहीं।

आपको दूध नहीं चाहिए क्या ?

''हाँ।''

बताओगे तभी तो मुझे पता चलेगा कितने बोतल ?

''डेढ।''

सुबह कितना ?

''आधा।''

ठीक है, अरे लड़के, कल से आकर दूध इकट्ठा कर लेना।

यहाँ ला सकती हो न ?

ठीक है, मैं दूध उबालकर चीनी डालकर ले आऊगी, क्यों ?

लड़का कुछ कहना चाहा रहा था लेकिन लकड़ी के टुकड़ों को लेकर वह रसोई की तरफ चला गया।

वह घूर रही थी, तो मैंने पूछा

''कल से दूध!''

''हॉ. दूंगी लेकिन लड़के से कहो कि आकर ले जाएं।''

उसे कुछ नहीं मालूम

मुँह में जीभ है न, पूछ तो सकता है। ''दूधवाली राचीअम्मा'' कहने पर कोई भी बता देगा।

''समझे क्या ?''

''हाँ।''

उसने एक बार फिर घूरते हुए देखा और चली गई। जाते-जाते वह कह रही थी मेरा घर उस तराई के नीचे है।

लड़के को बोल दो।

खेतों में घुसते हुए सुअर सा वह झाड़ियों से होती हुई चली गई।

दूसरे दिन सुबह लड़का लौट आया, यह कहते हुए कि वह घर ढूँढ नहीं पाया।

पांच मिनट भी नहीं हुआ, जंगली पेड़ों के बीच से राचीअम्मा अलुमिनियम बर्तन के साथ प्रकट हुई।

अबे लड़के, तराई से तू लौट गया। लो दूध, उसने मेरी तरफ देखा और कहा

कल मैं नहीं लाऊगी, लड़के को भेजना

लड़के ने गुस्से में दूध का बर्तन लिया

मैं अंदर जाने लगा तो राचीअम्मा ने मेरे पास आकर कहा

मुझे बाद में पता चला कि आप केरल से हो

अच्छा .... आप कहां से हो ?

मैसूर

मुझे आश्चर्य हुआ कि कर्नाटक वाली इतना अच्छी मलयालम बात करती है

राचीअम्मा कब से यहां हो?

मुझे यहां लाई गई
''कौन लाया?''
''आपके लोग?''

''केरल वाले?''

''हाँ''

आपके पिताजी

मुनिअप्पन

तीन राज्यों के लोगों के कारण राचीअम्मा यहां पहुंची। इतने में लड़के ने बर्तन वापस किया। लौट ते हुए राचीअम्मा ने कहा अबे छोकरे, कल तू नहीं आएगा तो मालिक को दूध नहीं मिलेगा।

दूसरे दिन लड़के ने घर ढूंढ निकाला और दूध ले आया। एक हफते राचीअम्मा दिखाई नहीं दी।

उस दिन शाम को आफिस से लौटने पर रास्ते में शोर सुनकर मुड़कर देखा। राचीअम्मा किसी को डांट रहीं थी। नालायक, तेरी मुँह नोच लूंगी। भूखे रहने पर तुझे उधार देकर मैने गलती की। अब पैसे हाथ में आ गए तो शाना बन रहा है, मेरे बारे में तुझे नहीं पता।

राचीअम्मा के आगे खड़ा युवक लजा गया।

''उसने कहा मै कल........''

''मुझे पैसे अभी चाहिए''

राचीअम्मा युवक के हाथ से पैसे लेकर गिनने लगी। युवक जाने लगा तो राचीअम्मा ने कहा

रुको

तू क्यों?

यह ले लो। व्याज नहीं चाहिए असल तो मिला गया। यही बड़ी बात है

युवक पैसा वापस लेना नहीं चाहता था। इतने में राचीअम्मा चीख पड़ी ले लो।
उसने हाथ सामने की। राचीअम्मा ने कहा ''बड़ा आया महाराज, पैसे वाला''

जैसे ही राचीअम्मा पुल से होकर मेरी तरफ पहुंची उसने कहा वह युवक चालू है। पैसा लेता है लेकिन लौटाता नहीं। अब उसके पास से पैसे नही लेती तो पूरा का पूरा खर्च कर डालता।

मुझे नहीं लगा कि राचीअम्मा मेरे जवाब के इंतजार में थी। ऐसे भी यह सब नाटक क्यों?

क्या राचीअम्मा को यह सब याद होगा ? अंधेरे में टॉर्च के चलाने सा उसकी हँसी ,क्या उसकी मुस्कुराहट में कोई विषाद भाव था ?

''हमें नहीं पहचाना?''

''हाँ, राचीअम्मा।'' मैंने क्षमा भाव में कहा।

मैंने जब यात्रा शुरू की राचीअम्मा के बारे में सोचा नहीं। हरी पहाड़ियों और चटटानों से हो कर यात्रा करने पर पता नहीं क्यों राचीअम्मा याद नहीं आई।

यहाँ बहुत बदलाव हुए हैं अब ऐसा लगने लगा कि यहां लोग बसते हैं। अस्पताल में काफी सुविधाएँ उपलब्ध हो गई। कार एवं लॉरियों की संख्या बढ़ गई लेकिन मनुष्य के माथे से पसीना अब भी बह रहा है। क्या यहां बदलाव बंद घर के दीवारों पर गिरते धूप सा थोड़ा बहुत ही हुआ है ?

मैंने सोचा कि मैं जिस सरकार की बड़ी गाड़ी में पहुंचा इसे देखकर बच्चे आश्चर्य में पड़ जाऐगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। दुकान के सामने गाड़ी के रुकने पर एक लड़का ऊँची आवाज में कह रहा था, ''हाथी निकला है।''

''तेरा बाप निकला'' बस में बैठे किसी ने कहा

बाप तो इतना बड़ा हो नहीं सकता। लड़के ने सोचा

बस में लोग हाथी को लेकर तरह-तरह से बात कर रहे थे। इतने में काला शरीर एवं लाल दांतोंवाली एक युवती आकर लड़के को कान पकड़कर ले गई।

राचीअम्मा से मेरे अच्छे संबंध थे। इसके बावजूद उसका चेहरा मेरे मन में साफ दिखाई नहीं दी। लेकिन बस ने जब दो तीन मोड़ पार की तो मुझे याद आया। सालों पहले की बात है जंगल में ऐसे ही घूमने निकला, रास्ता खोकर खाई में गिरने ही वाला था कि अचानक किसी ने मेरा हाथ पकड़ा। पता नहीं मैं क्यों चीख नहीं सका। शायद डर के मारे गले में आवाज अटक गई हो या फिर जिसने मेरा हाथ थामा उस पर मेरा विश्वास था।

जो भी हो मैं रूक गया। वह मुझे घसीटकर जंगल ले गया , कुछ देर बाद मैने उसे देखा।

राचीअम्मा।

आपने तो हाथी को हरा दिया...........। उसने भले ही मेरा मजाक उड़ाया, मैं उसे मारना नहीं चाहा, मेरे हाथ अब भी उसकी मुट्ठी में थे।

राचीअम्मा तुम कहां से आई ?

''मैं तो यहीं पर हूँ'' यह कहती हुई राचीअम्मा हँस पड़ी। जंगल के रास्ते से वह मुझे ले चली। अब मैं केवल राचीअम्मा के बारे में सोच रहा था।

''अब क्यों आए? क्या दुबारा यहां नौकरी लगी है?''

''नहीं, मैं मिसिस नायर से मिलने आया।''

''अच्छी बात है। आखिर मैं आप से मिल पाई।''

राचीअम्मा मुझे गौर से देखने के बाद कहा, ''आप मोटे हो गए।''

''उम्र के साथ व्यक्ति मोटा हो जाता है

''मै तो मोटी नहीं हूँ।''

''राचीअम्मा अभी भी जवान हो।''

वह हँस पड़ी। उसकी हँसी से ऐसा लगा मानो बिजली के टुकड़े किसी अंधेरे गडढे में अहिस्ता से गिर रही हो।

मैं चुप रहा। वह भी चुप रही।
''राचीअम्मा बीच-बीच में यहां आकर आपकी खबर लेती'' मिसिस नायर ने कहा। हम उसे सारी बातें बताते।

मिसिस नायर हँस पड़ी। मुझे दुख हुआ। राचीअम्मा तब भी चुप थी। क्या वह कुछ सोच रही होगी?

क्या सोच रही होगी ? सोचने के लिए उसके पास बहुत ....

तबकी बात मुझे याद आई, मेरी तबीयत खराब हो गई। तीसरे दिन पता चला कि शरीर पर कुछ फोड़े उग आए हैं। मै खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया। चादर हटाकर देखा। शरीर में फोड़े थे। ऐनक के सामने खड़ा रहा। चेहरे में यहां-वहां फोड़े उगे थे। पता नहीं और फोड़े उगेंगे कि नहीं।

मैं कुछ सोचते हुए चारपाई पर आकर बैठ गया। इतने में रसोइए ने पूछा

बिना दूध का चाय दूँ?

''नहीं।''

''दूध वाला चाय दूँ?''

''तुम चले जाओ।''

''कहाँ?''

''तेरे घर।''

''क्यों सर ?''

कुछ पूछो मत, एक महीने के बाद आना।

कुछ देर तक वह खड़ा रहा और चला गया।

थोड़ी देर बाद राचीअम्मा की आवाज़ सुनाई दी।

कोई है ?
कोई नहीं है ? मैंने बिस्तर से ही जवाब दी।

क्या उस तरफ शैतान है ?

मुझे गुस्सा आया। उसने दुबारा पुकारा, मैं चुप रहा।

दरवाज़ा खोलने की आवाज सुनाई दी। सामने राचीअम्मा खड़ी था।

''ओढ कर क्यों सोए है ?''

''तबीयत खराब है।''

''क्या हुआ ?''

''चिकनपाक्स।''

मेरे सोचने के पहले ही राचीअम्मा ने चादर उठा दिया

मेरे शरीर को देखते हुए कहा, ''यह तो देवी प्रकोप है।''

''ठंडी चीजें ही खाना''

थोड़ी देर बाद वह एक फल ले आई

पूरा खाओ। कुछ भी बाकी मत रखो। जो भी फोड़े और निकलने हैं। निकल जाऐंगे। ठंडी चावल, ठंडी चाय, राचीअम्मा के सिवा सब कुछ ठंडा था। खाया नहीं जाता, लेकिन राचीअम्मा ने माना नहीं, कहती खाओ। जैसे तैसे खा लिया।

दूसरे दिन सुबह उसने ठंडा पानी लाकर आंखों में छिड़का डाला। मैं चुप रहा, वह सुबह मेरे लिए भोजन लाकर चली जाती। फिर शाम को वापस आती।
मैंने कहा,'' यह फैलनेवाली बीमारी है।''
''मालूम है''

''आपका यहां रोज आना अच्छी बात नहीं है।''
''मतलब आप यहॉ मर जाए। जिस प्रकार उस लड़के को भगा दिया मुझे भगाने की कोशिश नहीं करना।''

उसे लगा कि बहस कर कोई फायदा नहीं है। सारे फोड़े उगे। पूरे बदन पर फोड़े ही फोड़े थे।

नाक के अग्र भाग पर, उंगलियों पर भी। कभी दर्द होता तो कभी खुजली।

मुझे जब दर्द होता तब पास खड़ी होकर राचीअम्मा नीम के पत्तों से शरीर को सहलाकर कहती ''कल तक सब ठीक हो जाएगा।''

राचीअम्मा ने कहीं से हल्दी का चूर्ण लाकर माथे पर लगाई। शरीर पर छिड़का, फिर पता नहीं अकेले में कुछ कहने लगी। देवी, तू यह सब देख रही है न?

उसकी स्वर में प्रार्थना कम एवं डरावट की भाषा ज्यादा लगा। शायद यह काम कर गया। दर्द कम हुआ। खुजली कम हुई। मैं थोड़ी देर सो जाता। ज्यादा देर आधी नींद की अवस्था में रहता। ऐसे में चावल, हल्दी का चूर्ण, तेच्ची के फूल आदि ले वेलीचप्पाड प्रकट होता। उनके लंबे बाल कान के दोनों तरफ गिरे हुए थे।

वेलीचप्पाड के आने से अलरी फूल का सुगन्ध, तलवार की चमक, पायल की आवाज, सुनाई दी। वह कई बीमारियों का नाम लेता है। कारी को पुकारता। बहुत बड़ा विपदा टल गया।

दर्द कम हो गया न ?

आखें खोला तो रचचीअम्मा सामने खड़ी थी।

''हाँ, कम हुआ।''

''अब पीड़ा से रोआगे तो, मैं मारूगी।''

मुझे हँसी आई। मैने हॅसी रोकने की कोशिश की। चुपचाप लेटे रहा।

''अब काफी पैसे कमा लिया होगा न, सब ठीक ठाक तो है।''

''मैं चुप रहा।''

''आप सकुशल रहने पर मुझे खुशी होती है।''

''क्यों?'' मैंने प्रश्न नहीं किया
फिर खामोशी। लेकिन मिसिस नायर बातें करती रही। नई शेवरले कार के बारे में बता

रही थी। ऊटी, बैंगलूर, गुरुवायूर घूमने, प्रवचन सुनने, मंदिरों में पूजा करने आदि के लिए बड़े गाड़ी की जरूरत पड़ती है। कार में बैठकर मंत्रोच्चारण करती हूं। लक्ष्य स्थान पर ही उतरती हूँ। यात्रा के दौरान सुकून बड़ी गाड़ी में ही संभव है।
एक और छोटी कार खरीदने का इंतजाम किया है। पेरशिया से बेटी और दामाद आ रहे हैं। उनको घूमने के लिए एक कार की जरूरत है, एक फियट कार की।

''कब लौट रहे हो ?'' राचीअम्मा ने पूछा

''कल सुबह।''

मैं बाद में मिलूंगी। अब जा रही हूँ। भैस को चारा देना है।

मिसिस नायर तब भी कार, के बारे में अपनी बेटी को स्वभाव एवं बदरीनाथ यात्रा के बारे में बातें कर रहीं थी।

मैं राचीअम्मा के बारे में सोचने लगा। चेचक के ठीक होने के बाद नहाया। उस दिन राचीअम्मा ने मुझे और भैसों की बारी-बारी सेवा की।

''मै गाँव जा रहा हूं, छुट्टी खत्म होने के बाद लौटूंगा।''

''अरे आप कहॉं चले, हम आपको नहीं छोडेगें।''

राचीअम्मा सुबह आकर घर साफ करती। फिर नाश्ता और चाय बनाती। दोपहर का खाना बनाकर जल्दी बाजी में चली जाती।

''भैस को खिलाना है''

''और आपने यहां एक भैस को तैयार कर दी है'' मैने कहा

राची अम्मा हंस पडी। वह झाड़ियों में ओझल हो गई, फिर भी उसकी आवाज सुनाई दी।

बीमारी के बाद आफिस जाने लगा तो एक दिन राचीअम्मा ने पूछा, लड़का अब नहीं आएगा?

लगता है नहीं आएगा। नालायक कहीं का। राचीअम्मा कुछ सोच रही थी।
''आपकी कोई बहन है।''

''नहीं''

''क्या पैदा नहीं हुई ?''

थी लेकिन मर गई।

यह सुनकर राची अम्मा चुप रही। वह कान हिलाए बिना खड़ी जो हाथी की याद दिलाई। थोडी देर बाद राचीअम्मा ने कहा

''मेरी भी एक बहन थी मर गई।''

दोनों चुप हो गए।

लौटते हुए राचीअम्मा से मैने पूछा, ''अब कौन है तुम्हारा ?''

''केवल भगवान।'' उसके चले जाने पर मैने खालीपन खाली महसूस की।

अब राचीअम्मा के चले जाने के बाद मानो वह खालीपन लौट आया हो।

मिसिस नायर को इन सबसे कोई फर्क नहीं पड़ा। एक्सपोर्ट लाईसेन्स पाने के लिए उसका पति जिन मुशिकलों का सामना कर रही थी, उसी का विवरण दे रही थी। इसे महीने में दो एक बार दिल्ली हो आना पड़ता है। वे हर किस्म के प्लेन में यात्रा नहीं कर सकते। उन्हे ब्लड प्रेशर है। बड़े बड़े लोगों को अब ब्लड प्रेशर की बीमारी है। मिसिस नायर ने मुझसे भी पूछा।

आपको ब्लड प्रेशर है?

''नहीं।''

''शुगर है''।
''नहीं।''

जवाब देते वक्त भी मन में राचीअम्मा ही थी। एक बार मैंने उसे डॉंटा था। वह घटना मुझे याद आ रही थी।

मैं आफीस से काफी थका हुआ घर पहुंचा। कुछ करने को जी नहीं हुआ। सोचा कि तराई में घुम आऊँ। वहां पेड़ों पर चॉंदनी को गिरते देखना अच्छा लगता है।

मैं वहां बैठा रहा। मूक तराईयां, चाय के बड़े बगान। बिन बादलों की साफ आसमान। अचानक राचीअम्मा वहां आई। वह काली गाय सी दिखी। उसका आना आकस्मिक था। वह मेरे पास आकर खड़ी रही।

दुखी हो क्या ?

मैने पूछा क्यों ?

''घरवालों के बारे में सोचकर।''

''नहीं।''

राचीअम्मा ने मेरे मॉं बाप, परिवार सभी के बारे में पूछा। मैं भी किसी से कुछ कहना चाहता था। संकोच रहे कुमुद के कली को चांदनी छुकर जगा रही थी।

मुझे नहीं लगा कि राचीअम्मा कोई अपरिचित थी। खामोश दिल का घड़कन सुनाई देता था। सिलवर ओक के पेडों को छूती हुई हवा सीटी बजाकर निकल गई। शायद दूर स्थित बादलों को वह छूकर जाएगी।

मैंने राचीअम्मा के हाथों को पकड़ा। चांदी की चूड़ियों ने आवाज की। मैने सोचा कि वह शर्मएगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

''राचीअम्मा।'' वह रो रही थी

मैंने उसका हाथ छोड़ दिया और दूर खड़ा रहा। तब उसने मेरा हाथ पकड़ते हुए पूछा मुझसे नाराज हो।

मैंने जवाब नहीं दिया

''हमसे नाराज नहीं होना'' राचीअम्मा ने कहा।
मेरे पति के मृत्यु के बाद मुझे आपसे मिलकर अच्छा लगा।

मृत्यु से पहले मेरी मां ने एक बात कही थी

''क्या?''

''मैंने मंदिर जाकर शपथ ली थी, कि गलती नहीं करूँगी, अब आपकी मर्जी।''

उसके उभरे हुए छाती पर आंसू गिर पडे।

''मेरी तरफ देखते हुए राचीअम्मा ने कहा।''

''आप जो भी कहें, मैं करने के लिए तैयार हूँ। लेकिन एक बात है।''

क्या?

''उसके बाद मैं ज़िदा नहीं रहूंगी, अब आपकी मर्जी।''

राची अम्मा ने फिर से मेरा हाथ पकड़ा। मैं हाथ न हटा सका और न पकड़ सका। न बहन कह पुकार सका। मन दुखी लगा कि सिलवर ओक के पेड़ों से होकर गुजरती हवा भी दुखी हो गई है।

मेरे हाथ को हिलाते हुए राची अम्मा ने पूछा, ''कुछ बोलते कयों नहीं ?''
नतमस्तक होकर मैंने कहा, ''क्षमा करना, तंग करने के लिए।''

राचीअम्मा रो पड़ी। हम दो रास्ते चले। परछाई व घने बादलों से भरे वातावरण में उसको ओझल होते देखा तो मन में एक सवाल उठा। तुम कौन हो ?

आज भी उसका कोई जवाब नहीं है।
मिसिस नायर के बातों से बच निकलने के लिए शाम को तर्राइयों की ओर चला। कभी नहीं सोचा था कि वहां पर राचीअम्मा से मुलाकात होगी।

वह अगरबत्ती के मोटे पेड़ के पीछे से प्रकट हुई। वह नहाकर निकली थी। बाल अभी भी गीले थे।
''पत्नी को क्यों नहीं लाए ?'' उसने पूछा

''किसने कहा कि मेरी पत्नी है ?''

आप नहीं बताओंगे तो भी मैं जान लूंगी। बेटी विजयलक्ष्मी स्कूल जाने लगी है क्या ?

''हाँ।''

मेरे बारे में सब कुछ जान ली हो।

''विजयलक्ष्मी को ले आते, मैं उसे चुमती।''

मैने मुस्कुराया।

पहले जैसे पैसा बहुत खर्च कर रहे हो क्यों ?

''उतने पैसे नहीं है राची अम्मा।''

विजयलक्ष्मी को किसी अच्छे लड़के के साथ शादी करवाना, पैसे भी न देना, गहने भी न देना आप हॅस क्यों रहे हो ?

''राचीअम्मा तुम्हारे पास पैसा है क्या ?''
''हाँ''

''हाथ में कितना?''

हाथ में नहीं बैंक में है। यहाँ तो अब बैंक भी है। लोग उधार मांगते हैं। उधार लेने के बाद लौटाते नहीं। बैंक में रखने पर व्याज भी मिलेगा। हमारा गॉव अब बड़ा हो गया है। स्कूल, न्यायालय, पुलीस थाना, टुरिस्ट आफीस आदि की सुविधा है। टूरिस्ट आफीस में मैं दूध बैचती हूँ। यह कहते हुए राची अम्मा जोर-जोर से हंस पड़ी।

अच्छा आपको शादी के लिए रिश्ते नहीं आए ?

कोई जवाब नहीं मिला।

''कब तक ऐसे जीओगी ?''

''मरने तक।''

''मदद के लिए किसी की जरूरत नहीं पड़ेगी क्या ?''

''ईश्वर है न ?''

कोई और मदद के लिए होना अच्छी बात है न ?

राचीअम्मा ने न में सिर हिलाई।

''फिर यह सारे रुपए किसके लिए इकट्ठे कर रही हो ?''

''मेरे उत्तराधिकारी के लिए।''

''वह कौन ?''

विजयलक्ष्मी, आपकी बेटी। बैंक में उसी के नाम पर रुपए जमा की है।

''क्या ?''

मैं मर जाऊंगी तो सारे पैसे विजयलक्ष्मी के मरने के पहले भी ले सकते हैं। लेकिन, आपको देने से कोइ फायदा नहीं है। सब कुछ खर्च कर देंगे।

मैंने राचीअम्मा के हाथों को पकड़ा। मेरी बहन ! राची अम्मा ने पूछा, ''मेरे घर आओगे।''

''जरूर।''

राचीअम्मा का घर पहले जैसा नहीं था। मैने सिर झुकाकर प्रवेश किया। वहां पर बैठा।

राचीअम्मा का दिया हुआ भैंस का गर्म दूध पीने पर उसने बीती बातों को सुनाई।

विवाह के तीन रिश्ते आए। तीनों को नकारा।

''कारण।''

''पहले दो की नज़र मेरी संपत्ति पर थी।''

''तीसरा''

तीसरे को मैंने नकारा

''कारण?''

कोई कारण नहीं है। ज्यादा मत पूछो वह कुछ और बात करने लगी। उसने मिट्टी व कोयला से तैयार दीवार की तरफ ईशार करते हुए कहा।

यह देखो

पास जाकर देखा। वहां मेरा एक पुराना फोटो था। वह हँस पड़ी। उसने मेरा हाथ पकड़ते हुए पूछा।

''हमें भूल गए''

''नहीं।''

इतने सालों में कोई खबर नहीं। मैं हमेशा सोचती आप आओगे।

वह मेरे इतने पास खड़ी थी कि हमारी शरीर एक दूसरे को छू रहा था। मैने उसकी आंखों की ओर देखा।

राचीअम्मा

''हमें भूल गए न ?''

तूने हल्दी का चूर्ण लगाकर शपथ की थी
''हाँ।''

''फिर।''

मैंने हल्दी का चूर्ण मिटा दी। देखो मेरे माथे पर। उसने धीमी आवाज में कहा, मैं भी मनुष्य हूँ। मिटटी से बनी हूँ।

मैंने पूछा, यह सब तत्वज्ञान कहां से सीखा। हवा में मिट्टी व यूकालिप्टस का गंध था।

राचीअम्मा ने मेरी तरफ देखते हुए कहा मेरी दादी को भी केरल वाले ही ले आए।

घर पहुंचा तो मिसिस नायर मेरा इंतजार कर रही थी। उन्होने पूछा, कल सुबह लौट रहे हो ?

''हाँ।''

''हमारे शेवरले कार में छोड़ देगे।''

''शुक्रिया, मैं बस में चला जाऊँगा।''

दूसरे दिन सुबह बस में लौटने पर दिल भारी था। रास्ते में सुन्दर पहाडियां, नीला आकाश, बादल, एवं युकालिप्टस पेड़ों का सुगन्ध भरा हुआ था।

शांताम्मा

तेलुगु मूल : **वैद्यम आनंदवर्धन**
हिन्दी अनुवाद : डॉ. पी. शंकर
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

स्कूल अध्यापक पाठ पढ़ने से, शांताम्मा हमें जीवन सिखाई। पूर्व में ही आर्थिक स्वालम्बन क्या होता है, को अनुभव पूर्वकबताई। स्कूल के पुस्तकों में कई नहीं मिलने वाला जीवन के पाठ को एक बात भी किए बिना हमें सिखाई। पाप, पुण्य लोक मार्ग की जानकारी नहीं होने की छोटी उम्र में मेरा उस से केवल दो वर्षों का संबंध था। उस का नाम शांतम्मा था। पूरा नाम मुझे नहीं मालूम। सभी लोग उसे शांताम्मा कहकर बुलाते थे। सब के जैसा ही स्कूल जाना मुझे भी पसंद नहीं होता था। बड़े लोगों के डर के कारण उस नापसंद को एक कोने में फेंककर कंधे को पुस्तकों की थैली लगाना ही पड़ता था। लेकिन मुझे ही नहीं, मेरे साथी विद्यार्थियों को भी स्कूल बोलने से अधिक पसंद होने जैसा की थी शांतम्मा। यह सब तीन दशक पहले का किस्सा है। मैं जब नौ साल का लड़का था। वास्तव में हम लोग कभी कभी स्कूल नहीं आते थे, लेकिन शांतम्मा रविवार के दिन भी स्कूल आया करती थी। पतला शरीर, काला रंग, लम्बी रहती थी। किसी दिन भी वे बीमारी, दर्द को नहीं जानती थी। क्या वे पाठ पढ़ने वाली अध्यापिका नहीं, बच्चों से खेल खिलाने वाली अध्यापिका भी नहीं थी। चित्र रचना सिखाने वाली क्राफ्ट अध्यापिका भी नहीं थी। अध्यापकों का देख रेख करने वाली प्रधानाध्यापिका भी नहीं थी। फिर कौन थी वे ?

स्कूल अध्यापक पाठ पढ़ने से, शांताम्मा हमें जीवन को सिखाई। पूर्व के दिनों में आर्थिक स्वालंम्बन क्या होता अनुभवपूर्वक सिखाई। उत्पादकता क्या होता ? श्रमशक्ति क्या होती, एक नहीं मानव के जीवन में क्या चाहिए वे सब सिखाई। श्रमिक जीवन के सौंदर्य से हमें साक्षात्कार कराई। स्कूल के किताबों में कहीं पर नहीं मिलने वाले जीवन के पाठ को बिना किसी बात किए सिखाई। उन्हें स्कूल के बच्चों के साथ, काम करने वाले सदस्य, भी आदर करते थे। एक तरह कहा जा सकता है कि वे उस स्कूल की रीढ़ी की हड्डी थी।

३३ वर्षों से पहले देखा उसका चेहरा कई वर्ष भीतनें पर भी मन से नहीं जाता। मन को कुछ समय मिलने से वे याद आती रहती है। कोई भी कैसा काम कहने से कर देती थी। अधिक काम देने से भी करती थी। सब काम करने से भी उस के चेहरे पर गुस्सा नहीं दिखाता था। लेकिन, उसके ऑखे में किसी प्रकार का धैर्यभाव मुझे दिखाता था। उस समय मुझे यह पता नहीं होता था। वास्तव में वे मेरे जीवन में कैसे आई की जानकारी देने के लिए कुछ पीछे जाना पढ़ेगा।

कैंसर का शैतान मेरे पिता को असामायिक रूप में ले जाने से, जैसे है वैसे ही गद्वाल छोड़कर, माँ का पैदाईश गाँव आलमपूर को बदलना पड़ा। उस समय मैं चौथी में पढ़ रहा था। मनुष्य मरना क्या होता पता नहीं होने की आयु थी मेरी। दर्द, कष्ट, रोना सब बड़े लोगों से संबंधित विषय समझने का ज्ञान था मेरा। सब रुकने से समय नहीं ठहरता। समय के साथ मेरी पढ़ाई नहीं रुकना समझकर अलमपूर में मेरे मामा पढ़ा रहे प्राथमिक पाठशाला में मुझे भर्ती किया गया। आलमपूर नया नहीं था मेरे लिए। यह मेरी माँ का गाँव है। स्कूल के छुट्टियों के समय में हर बर गद्वाल से आलमपूर जाता था। मेरे जीजा का छोटा भाई (मेरी बुवा का छोटा बेटा) मेरी उम्र का था। वह मुझ से २० दिनों का बड़ा था। वे भी मेरी कक्षा में था। मैं उस स्कूल में भर्ती होने पर वहॉ का वातावरण नया जैसा नहीं लगा।

क्योंकि पाठ पढ़ने वाले अध्यापक मेरे बड़े जीजा होने के कारण कोई हमारे पास नहीं आते थे। हमारा घर स्कूल से कुछ दूरी पर था। ये सरकार द्वारा खोल गया प्राथमिक पाठशाला हरिजनवाड़े में था। हर दिन सुबह उठकर स्कूल जाते थे। वहाँ पर व्यायाम कराया जाता था। एक घंटा व्यायाम करने के बाद घर जाकर स्नान करके टिफिन खाकर फिर से किताबे थैली में रखकर स्कूल जाना था। लंच समय में भी ऐसा ही करते थे। घर जाकर खाकर आते थे। सुबह जल्दी उठना ही दिक्कत होती थी। पाठशाला से ज्यादा पाठशाला की घंटी पसंद थी। मुझ में जब कभी घंटी बजने से एक तरह का उत्साह होता था। हर घंटी में यह उत्साह बढ़ता था, घर जाने की घंटी कब बजेगी ! मन काफ़ी बेसब्री से इंतजार करता था। उस घंटी को शांतम्मा बजती थी। हमारी स्कूल की चपरासी।

वे जीने के लिए स्कूल अध्यापन के दिन थे। अध्यापक का वेतन ज्यादा नहीं होता था। फिर चपरासी का वेतन क्या हो सकता है ? हमारा स्कूल पूर्व में निर्माण किए कमरों में चलता था। पत्थर का बना था। अब सिमेन्ट से प्लास्टर किए जैसे उस समय मिट्टी का लेप लगाते थे। बारिश होने से यह मिट्टी पिगलकर केवल पत्थर रहते थे। मिट्टी के डेर होने से बारिश होने पर बहा जाते थे। छत से पानी टपकने से कुछ कुछ दूर सरक के दो या तीन कक्षाएं एक हो जाते थे। सरकारी पाठशाला होने के बावजूद इस पर किसी का ध्यान नहीं रहता था। अनुदान नाम मात्र का होता था। स्कूल की अच्छाई के लिए कोई ध्यान नहीं देते थे। उसे कौन कहा पता नहीं। क्या वे स्वयं सोची पता नहीं। लेकिन, एक अच्छी सोच से आगे आई शांतम्मा। पढ़ाई के विषय में उस समय प्रतियोगिता बिल्कुल नहीं दिखाई देती थी। कोई न कोई पिरार्ड खाली रहता था। उस स्कूल में पांचवी तक

कक्षाएं थी। चार, पांच कक्षा में कौन सा पिराड़ खाली होना पहले से ही पता कर लेती थी शांतम्मा।

सभी बच्चों को चार पांच दलों के रूप में विभाजित करके स्कूल के परिसर में ले जाती थी। उस विशाल आंगन में एक बोरिंग थी। उस बोरिंग के सामने वाले क्षेत्र को हम से खेती लायक करती थी। उसके बाद एक दल को दो खाली चौकोर को सौंपकर, किस के चौकोर में वे अपनी खेती करना कहती थी। केवल बोलना ही नहीं, कैसे करना हमें सिखाई। धानियॉ, टमाटर बीज, हरी मिर्च के बीज, करेला, भेड़ी, आलू इस तरह भिन्न भिन्न प्रकार के बीजों को हमारे चौकोर में फैलती थी। बिना भूले उसे देख रेख करना और बोर के पानी को उसमें हम से बहाया कराती थी। एक सप्ताह के बाद बीजों अंकुरित होकर उस से छोटे पौधे निकालते थे। उसे देखकर हमारे संतोष का ठिकाना नहीं रहता था। जैसे पहली बार बच्चे को जन्म दिए समय कोई स्त्री को कितनी खुशी होती उसी तरह की अनुभूती हमें होती थी कह सकते हैं। हमारे हाथों से ठीक किए जमीन में हम बोए बीज पौधों का रूप लेना ! उसे हम हमारे आँखों से देखे !! और क्या बोल सकते ? यह उपज को हम से काँटाकर गट्टों में बाँधती थी। उन सब को शांतम्मा सप्ताह अंत होनेवाले बाज़ार में बेच आती थी। कौन सा दल ज्यादा पैदावार करने से उस दल जीता जैसा माना जाता था। हमें, पैदावार किए सागसब्जियाँ बेचकर जो पैसा मिलता था उसे स्कूल के लिए खर्च किया करते थे।

देश को अनाज देनेवाला किसान का जीवन कितना उच्च है, किसान श्रम शाक्ति कैसे संपदा को उत्पन्न करती, बिल्कुल छोटी उम्र में शांताम्मा हमें सिखाई। यह सब मुझे काफ़ी प्रभावित किया। अपने स्वयं के गाँव से कई दूर रह कर नौकरी कर रहे मुझ में आज भी सागसब्जियाँ पैदा करने की ललक वैसे ही रहा गई। मेरी उम्र के साथ यह बढ़ती गई।

हमारी बाल्यावस्था में कई वर्ष पूर्व शांताम्मा हम सब में सागसब्जियाँ पैदा करने की सोच बोने से आज यह बढ़कर पेड़ का आकार लेने जैसे प्रतीत होता है। छः सात वर्षों के पहले तक यह संघर्ष मुझ में भीतर ही रहता था। अब ये मुझे ठहरने नहीं देता। अक्सर मिलने पर कई मित्रों के समक्ष मेरी इस सोच को बताता हूँ। कुछ लोग दया भाव से देखते थे, और कुछ हँसते थे। फिर भी मेरा दृढ़ विश्वास है। किसी ने कहा था! मैं ये नौकरी औकरी छोड़कर कभी भी खेती कर सकता हूँ। भविष्य में शांताम्मा द्वारा दिखाया पाठ ही आजीविका होगी शायद।